(शलम श्रीराम सिंह की कविता)

पूरे हुए पचास–वर्ष

नाश्ते के लिए भुनी हुई स्त्री का गोश्त लाया जाए
हाथ धोने के लिए अगवा किये गए
किसी बच्चे की खोपड़ी में लाया जाए ठण्डा पानी
शाल के बदले किसी निदोर्ष नागरिक की चमड़ी लाई जाए
महामहिम परेड की सलामी लेने के लिए तैयार हो रहे हैं
भ्रष्टाचार के पचास वर्ष पूरे हुए
बलात्कार और व्यभिचार के पचास वर्ष
पूरे हुए पचास वर्ष हत्या और हाहाकार के
मानवता के सारे प्रतिमान ढहाए गए
बहाए गए घड़ियाली आंसू जार–जार
चढ़ाए गए आखिरी ऊंचाई तक प्रार्थनाओं के स्वर
भगवानों के घर जलाए और गिराए गए
जी भर तबाह की गई दिलों की खूबसूरती
वादियों और बस्तियों पर तैनात हुए सन्नाटे
गोलियों से खेले गए मजहब और जबान के खेल
मेल बरकरार रखने के लिए हिन्दू–मुस्लिम–जैन–सिख–ईसाई का
नारा लगाते हुए 'भाई–भाई' का, पूरे हुए पचास वर्ष

सवाल उठाते–उठाते
बोलियां नंगी हो गई हैं भाषाएं छिनाल
मनों की सुंदरता समाप्त हो गई हैं तनों के विज्ञापनों से
फ़िर भी कुछ लोगों के लिए
'मचलती और झूमती हुई आ रही आजादी'
बर्बादी का ऐसा बेशर्म जश्न कब और कहां मनाया गया है इतिहास में?
इस बीच लगातार हलाल हुए हैं भगत सिंहों के सपने
बिस्मिलों की तमन्नाएं, अशफाकउल्लाओं के जज्बात
सुभाषों की ललकारें, गांधियों के सन्देश और जयप्रकाशों की तड़प,
हिंसा और हड़प के पैरोकारों का ध्यान नहीं गया उधर
कान नहीं गया किसी का दुर्घटना के इतने कड़े कर्कश नाद पर

भविष्य के अन्धेरों से भयभीत–
रोशन उंगलियों की प्रतीक्षा करता रहा देश
आजादी के पहले की बात और थी, आजादी के बाद की और है
वह गुलामी का दौर था, यह गुलामों का दौर है
वनों की हरियाली नष्ट की गई इस बीच
घोटा गया नदियों का गला
पहाड़ों की खाल खींची गई पूरी बेरहमी के साथ
पशुओं की भूख तक भुनाई जा रही है शान से
ईमान के गले पर पांव रखकर की जा रही है बेईमानी
जान और जहान से बड़ा हो गया है पैसा
काहे की देशभक्ति, नैतिकता काहे की, न्याय कैसा?
ज्ञान के मंदिरों में गुंडे तैयार किए जा रहे हैं यहां
झकाझक परिधानों में विचर रहे हैं मूंछ मुंडे अपराधी
पूरा का पूरा मुल्क इनके बाप की जागीर हो जैसे

चारों ओर बोलबाला है तस्कर संस्कृति का
रिश्वत–कमीशन–हवाला और घोटाला है चारों ओर
और इस देश का प्रधानमंत्री मजबूर है
मजबूर है हमारा सब से बड़ा और विश्वसनीय सन्तरी

एक सदा जीवित जन–संसार पर्दे के पीछे सरकाया जा रहा है
दरकाया जा रहा है देश का भूगोल अपनी इच्छा भर
दरांतियों से दरांतियां नहीं, जातियों से जातियां भिड़ाई जा रही है
वर्ण–विद्वेष की लड़ाइयां लड़ाई जा रही हैं, वर्ग संघर्ष के बदले
मूर्तियों की आड़ में जबरजोत की जंग जारी है
एक खतरनाक चुप्पी तारी है कश्मीर से कन्याकुमारी तक

उदार बनाये जाने के चक्कर में नगद से उधार होता जा रहा है देश
उधार होता जा रहा है विश्वबाजार में बदलते हुए खुद को
जड़ी–बूटियों तक पर नहीं रह गया उसका अधिकार
नीम तक को लाकर पटक दिया है बाज़ार की चौखट पर
यह एक जीवित धिक्कार है हमारे लिए

पिछले पचास वर्षों में देश की अंतरात्मा सो गई है
गिद्धों और महागिद्धों की भूमि हो गई है इस देश की धरती
सोने की चिड़िया की जान सांसत में है
आफ़त में है कविता का एक–एक शब्द
भ्रष्टाचार–बलात्कार–व्यभिचार–हत्या
और हाहाकार के पचास वर्ष पूरे हुए
परेड की सलामी लेने के लिए तैयार हो रहे हैं
महामहिम।

पेज 1 का शेष भाग

बालश्रमिक की हत्या पर सन्नाटा, श्रम विभाग तो जागा पुलिस जागने को तैयार नहीं

नियमानुसार प्रत्येक माह कम से कम दो बार श्रम विभाग के अधिकारी कार्य स्थल का 'निरीक्षण' करने आते हैं। इसके नाम पर वे केवल प्रबन्धकों से मेल-मुलाकात एवं अपना चुग्गा-पानी लेकर चले जाते हैं। उन्होंने कभी नकी जैसे बालश्रमिकों का नोटिस नहीं लिया, कभी वेतन, व हाजरी सम्बन्धी तथा कानूनी उल्लंधनों का संज्ञान नहीं लिया। किसी अधिकारी ने सुरक्षा मानदंडों को जांचने की जरूरत नहीं समझी। इन सबका तो केवल एकसूत्री कार्यक्रम रहा है 'मंथली' उगाहना। हो भी क्यों न जब शिवचरण जैसे श्रममंत्री को यहां तैनाती के पैसे देने के बाद बने रहने के लिये 'मंथली' अलग से देनी पड़ती हो।

श्रम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार वारदात के दो दिन बाद कारखाना उपनिदेशक (सुरक्षा) ने मौका मुआयना करके सुरक्षा सम्बन्धी तमाम उल्लंघनाओं की एक विस्तृत रिपोर्ट बनाकर अपने मुख्यालय चंडीगढ भेज दी है। अब वहां पर निर्णय दिया जायेगा कि प्रबन्धकों का चालान करके सी जे एम कोर्ट में मुकदमा चलाया जाय अथवा उन्हें सुधरने का मौका दिया जाय। यहां प्रश्न यह पैदा होता है कि हर महीने जो श्रम विभाग के अधिकारी उस कार्य स्थल पर जाते थे, उन्होंने अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कितनी गंभीरता से किया? यदि उन्होंने ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया होता तो न तो वहां बालश्रमिक होता और न सुरक्षा-उपायों की कमी के चलते उक्त हत्या होती। लिहाजा गैरइरादतन हत्या के आरोप में श्रम विभाग के उक्त अधिकारी भी बराबर के दोषी हैं।

श्रम विभाग भी हरकत में तभी आया जब मज़दूर मोर्चा ने पहले फ़रीदाबाद के डी एल सी और फ़िर राज्य के लेबर कमिश्नर से इस जघन्य कांड के बारे में पूछताछ की। चलो, जगाने के बाद श्रम विभाग ने कम से कम कुछ लिपा-पोती तो की, पुलिस विभाग ने तो उसकी भी जरुरत महसूस नहीं की। ज़िले भर से विभिन्न प्रकार की सूचनायें एकत्र करने के लिये पुलिस कमिश्नर की बाकायदा एक आसूचना (सुरक्षा) ब्रांच है जिसका काम इस तरह की सूचनायें एकत्र करके सम्बन्धित अधिकारियों को देना होता है। वह ब्रांच तो गयी ऐसी-तैसी में, खुद इस संवाददाता द्वारा बार-बार सूचना देने के बावजूद भी इस महकमे के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है। इसके बावजूद मुख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा 'संवेदी पुलिस-सशक्त समाज' के पोस्टर लगाने में कोई शर्म महसूस नहीं करते।

एक बाल श्रमिक जिसकी हत्या को दबाना ज्यादा फलदायक हो, सरकारी तंत्र ही नहीं मीडिया और एन जी ओ के लिए भी समाचार नहीं बनता, नकी बुल हसन की दुखद मृत्यु का यही संदेश है।

13 वर्षीय बाल श्रमिक नकीबुल हसन सपुत्र मोहम्मद हजरत असम के एक छोटे से गांव बगरी खेड़ा का मूल निवासी था। रोज़ी रोजगार की तलाश में अपने एक रिश्तेदार के साथ वह फ़रीदाबाद पहुंचा था इतनी छोटी सी उम्र में, पढाई-लिखाई से पूर्णतया वंचित नकी उस लिफ्ट को चलाने में इतना माहिर था कि उसके बगैर वह लिफ्ट चलती ही नहीं थी। कम्पनी की ओर से उसकी दिहाड़ी 250 रुपया थी जिसमें से 50 रुपया बतौर कमीशन के जमादार हड़प लेता था। भारत सरकार, असम सरकार, हरियाणा सरकार, यानी तीन-तीन सरकारों की शिक्षा, श्रम, बाल-विकास की तमाम योजनाओं व दावों का साक्षात विरोधाभास। शोषण का जीता जागता नमूना। फ़रीदाबाद में ही ऐसे हज़ारों बच्चे मिल जाएंगे। देश में लाखों होंगे।

फुकरापंथी का मारा एक डीजीपी बेचारा

धनखड़ की जान इतनी सी नाराजगी में ही छूट गयी। यदि कहीं उन्होंने दलाल का कहना मान कर यह ग़लती कर दी होती तो काफ़ी मंहगी पड़नी निश्चित थी। यदि गांव वाले दलाल व उनकी पायलेट-एस्कार्ट के साथ कोई छेड़खानी न भी करते तो भी मीडिया में यह खबर प्रकाशित होने या आरटीआई के लपेटे में आने पर धनखड़ क्या जवाब देते? वी आई पी सुरक्षा के नाम पर होने वाले तमाशों, लाल बत्ती व सायरेन के दुरुपयोग पर सुप्रीम कोर्ट पहले से ही काफ़ी तल्ख है। यह मामला भी यदि सुप्रीम कोर्ट पहुंच जाता तो दलाल का तो कुछ बिगड़ना नहीं था, धनखड़ की नौकरी पर जरूर संकट खड़ा हो जाता। यह किस्सा जहां दलाल की फुकरापंथी को प्रकट करता है, वहीं धनखड़ की समझदारी व चतुराई भी। इतने बड़े पद से निवृत हुए दलाल ने एक क्षण को भी यह सोचने की जहमत नहीं उठाई कि जो वह मांग रहे हैं, उसके परिणाम क्या हो सकते है?

विदित है कि दलाल निवृत होने के बावजूद मुख्यमंत्री की कृपा से गुड़गांव में 'हीपा' प्रमुख के पद पर तैनात हैं। इस पद पर सरकार सदैव उस एचसीएस या आईएएस अधिकारी को लगाती रही है जिसे खुड्डे-लाइन लगाना हो। नौकरी की ललक में, हाथी जैसे ऊंचे पद से उतर कर दलाल को उस गधे जैसे पद पर बैठने में कतई कोई शर्म नहीं आई, वैसे यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है, क्योंकि दलाल ने अपनी पूरी नौकरी में यही कुछ तो किया है। भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार दलाल ने एमडीयू का कुलपति पद व हरियाणा लोक सेवा आयोग का पद हथियाने के लिये भी मुख्यमंत्री के खूब तलवे चाटे थे; लेकिन उन्होंने यह कह दिया बताते हैं कि 6 साल तक डी जी पी रख दिया यही क्या कम है।

मुज़फ़्फ़रनगर, मोदी, मुलायम सत्ता का खेल कायम

मुज़फ़्फ़र नगर में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा की मार्फ़त मुलायम चाहते हैं कि उनका मुस्लिम वोटबैंक, जो एक साल में सपाई गुंडों की कारस्तानियों से उखड़ रहा था, उनके साथ ही बना रहे। जैसा कि पहले भी इसी स्तम्भ में लिखा जा चुका है, मोदी की भाजपा में ताजपोशी के बाद मुस्लिम भावनायें कांग्रेस की ओर मुड़ रही थीं। यदि ऐसा हो गया तो मुलायम का प्रधानमंत्री बनने का सपना भी पूरा नहीं हो सकता।

उधर भाजपा को भी यही रास आता है कि मुस्लिम वोट मुलायम को जायें न कि कांग्रेस को। भाजपा को अच्छी तरह पता है कि मोदी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बनाने से मुस्लिम वोट स्वाभाविक रूप से कांग्रेस की झोली में जायेंगे। लिहाज़ा उनका ध्यान हिन्दू वोटों के ज़्यादा से ज़्यादा ध्रुवीकरण पर है। यह सोद्देश्य है कि भाजपा प्रभाव क्षेत्र वाले बड़े राज्यों जैसे कर्नाटक, बिहार, यूपी महाराष्ट्र, राजस्थान, में साम्प्रदायिक दंगों का सिलसिला चल निकला है। यद्यपि वे अभी मुज़फ़्फ़र नगर के पैमाने पर तो नहीं पहुंचे हैं पर प्रयास उसी दिशा में हो रहे हैं।

मुज़फ़्फ़र नगर की साम्प्रदायिक हिंसा में होने वाली एक-एक मौत भाजपा और मुलायम द्वारा फ़ायदे का सौदा मानी जा रही है। पर क्या यूपी का मतदाता नादान है कि वह उस खेल को न समझ सके? आज मोदी ने तुर्की टोपी भी पहन ली है और वह अजमेरशरीफ़ की दरगाह में चादर चढाने भी जा रहा है। इस ऊपरी दिखावे को समझना क्या मुश्किल है?

अगर मोदी का वाकई हृदय परिवर्तन हो गया है, जैसा कि भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह कहते घूम रहे हैं, तो देश भर में दंगे कौन करा रहा है? आखिर विश्व हिन्दू परिषद और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसे घोर कट्टरपंथी हिन्दू संगठनों का मोदी को पूर्ण समर्थन मिला हुआ है।

अपने खेल को आगे बढ़ाते हुए उत्तर प्रदेश की सपा सरकार ने मुज़फ़्फ़र नगर दंगों में भाजपाई विधायक व कार्यकर्ताओं के विरुद्ध दंगा भड़काने के लिये मुकदमे दर्ज किये हैं, होने भी चाहिये। पर अखिलेश सरकार की अपनी नीयत क्या है? ध्यान रहे कि पीलीभीत में भाजपा सांसद वरुण गांधी के विरुद्ध दायर इन्हीं आरोपों के मुकदमे को अखिलेश सरकार ने ही सरकारी गवाह बिठा करा खत्म करा दिया था। मुज़फ़्फ़र नगर में भी ऐसा ही होना है । राजनैतिक रोटियां सेंक लेने के बाद वहां भी आग ठंडी कर दी जायेगी।

सत्ता से मेल ही खेल है जिसे मुलायम और भाजपा मिलकर खेल रहे हैं। यह अलग बात है कि खेल के नियम ही कुछ ऐसे है कि उन्हें गाहे-बगाहे एक दूसरे को गालियां सुनानी पड़ती हैं।

लघुकथा

सरकारी खिचड़ी

-कल्याणी झा

अचानक बस्ती में चीख-पुकार मच गई। पहले तो कुछ समझ में नहीं आया, पर जल्दी ही लोग स्कूल की तरफ़ दौड़ने लगे। औरतें होशो-हवाश खोए गंदे नाले के पास बने स्कूल की तरफ़ भाग रही थीं। लगभग सारे मर्द काम पर गए हुए थे।

जल्दी ही आवाजें आने लगीं कि 20-22 बच्चे बेहोश पड़े हैं। उनके मुंह से झाग निकल रहे हैं। सबों ने स्कूल से मिलने वाली फ्री की खिचड़ी खाई थी। खिचड़ी खाने के चंद मिनट बाद ही बच्चों को चक्कर आने लगा और वे पटापट गिरने लगे। ये हाल देख डॉक्टर को बुलाना तो दूर, प्रिंसिपल स्कूल छोड़ भाग खड़ी हुई। कई मास्टरनियां भी मौके से भाग गईं। राह चलते लोगों ने यह दृश्य देख पुलिस और अस्पताल में फ़ोन किया। उनके आते-आते कई बच्चों के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। कई बेहोश थे। सबों को एंबुलेंस में लादकर अस्पताल पहुंचाया जा रहा था।

औरतें छाती पीट-पीट कर दहाड़ें मार रही थीं।

मंगरू के कानों में जब यह आवाज गई तो वह बेचैन हो गया। वह दोनों आंखों का अंधा था। उसका पोता भी स्कूल पढ़ने जाता था। उसके बेटे-बहू, दोनों काम पर जाते थे। वह अकेला झुग्गी में रहता और स्कूल की छुट्टी होने के वक्त झुग्गी के दरवाजे पर बैठ पोते के आने का इंतजार करता। उसका पोता उसे बहुत चाहता था। जब वह आता तो उसके लिए भी थोड़ी खिचड़ी बचा कागज के टुकड़े पर ले आता और अपने हाथों से उसे खिलाता।

मंगरू नाले के किनारे बैठ उसी का इंतजार कर रहा था कि उसे पता चला कि खिचड़ी खा बच्चे मर रहे हैं। खिचड़ी में जहर मिल गया था। न जाने कैसे। मंगरू बेचैन हो गया, पर करे क्या... अंधा था, बिना किसी के सहारे आ-जा नहीं सकता। वह रोने लगा और सबसे चीख-चीख कर कहने लगा कि मुझे स्कूल ले चलो। पर किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह लकड़ी टेकते आवाज की दिशा में चल पड़ा, पर ठोकर लगने से गिर गया। जब उसे होश आया तो वह अपनी झुग्गी में पड़ा था। उसके सिर में चोट आई थी। घर में चीखपुकार मची थी। मुन्ने की मां दहाड़े मार कर रो रही थी। मुन्ना खत्म हो चुका था। मुन्ना रोज उसके लिये खिचड़ी बचाकर लाता था जिसे खाकर उसे संतुष्टि मिलती और वह कहता, वाह रे, सरकार, ग़रीबों के बच्चे को पढ़ाने के साथ खाने का इंतजाम किया है।

पर आज इसी खिचड़ी ने उसकी दुनिया लील ली थी। सरकारी खिचड़ी खाकर उसका पोता दुनिया से चला गया था। मुन्ने को नहलाने के लिये उसके कपड़े खोले गए कि जेब से खिचड़ी का दोना बाहर गिरा। लोग अभी कुछ सोचते कि एक कुत्ते ने उसमें मुंह मारा और चंद मिनटों में उसके मुंह से भी झाग निकलने लगा। इस कुत्ते को मुन्ने ने पाला था। वह उसकी झुग्गी में ही सोता था, पर सरकारी खिचड़ी खाकर मुन्ने के साथ उसका प्यार कुत्ता भी दुनिया से चला गया। मंगरू की अंधी आंखों में और भी अंधेरा उतर आया।